मेघदूतम् तथा भृङ्गदूतम् का समीक्षात्मक अध्ययन

आदर्श तिवारी शोधछात्र (संस्कृत) डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या एवं
प्रो0 दानपति तिवारी, आचार्य एवं अध्यक्ष–संस्कृत विभाग, महात्मा गांधी का"ाी विद्यापीठ, वाराणसी
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.134

कविकुलगुरु कालिदास ने अपनी अलौकिक कृति से नवीन मानदण्ड को प्रस्तुत किया है। महाकवि ने ऋतुसंहार में देश का, धरती का और ऋतुओं के आवर्तन–विवर्तन के साथ परिवर्तित होती छवि को प्रदर्शित करने वाला पहला खण्डकाव्य को उद्धृत किया, तो मेघदूत के द्वारा उन्होंने ऐसी अनूठी कृति सहृदयों के समक्ष रखी जो अपनी रचना काल से लेकर आज तक इनकी सराहना होती रही है तथा जिससे संदेशकाव्य या दूतकाव्य की एक अत्यन्त समृद्ध परम्परा का विकास उद्भव हुआ। लगभग सौ श्लोकों की एक छोटी–सी रचना एक सुदीर्घ काव्य परम्परा की प्रवर्तक या उपजीव्य बन जाये, ऐसा संस्कृत साहित्य में कम ही होता है।

विषयवस्तु– मेघदूत की विषयवस्तु कवि ने विरही यक्ष के मुख से अलकापुरी के मार्ग तथा अलका के वर्णन द्वारा प्रकृति का सुन्दर और सरस मनोहारी दृश्य को वर्णित किया है।[1] मेघदूत दो खण्ड में है–पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ। यद्यपि इस खण्डकाव्य में कथानक का अभाव ही दिखाई देता है तथापि केवल पहले पद्य में बताया गया है कि कोई यक्ष था, जो अपने कर्त्तव्य में प्रमाद कर बैठा और इसके कारण उसे उसके स्वामी कुबेर ने एक वर्ष के लिए देश से निष्कासित कर दिया। तब उस यक्ष ने रामगिरि के आश्रमों में निर्वासन के दिन को व्यतीत किया था। जिसका वर्णन महाकवि कालिदास ने मेघदूत के पूर्वमेघ में बड़े मार्मिक रूप से वर्णित करते हुए कह रहे हैं–

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमितमहिमा, वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे, जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।[2]

इसके पश्चात् रामगिरि पर रहते–रहते यक्ष ने आठ महीने व्यतीत कर दिये और आषाढ़ मास के पहले दिन उसने एक बादल को देखा, रामगिरि पहाड़ पर टिका हुआ था। इतने महीनों से एकाकी रहते–रहते यक्ष बावला हो गया था विरह में उसकी मनःस्थिति विछिन्न थी। उसके मन में यह बात आयी कि यह मेघ मेरी प्रिया तक मेरा संदेश ले जा सकता है।[3] बस उसने मेघ से अपना सन्देश अलका नगरी ले जाने का अनुरोध करते हुए अपने विषय में, अपनी प्रिया के विषय में बताना आरम्भ कर दिया। यक्ष ने मार्ग में पड़ने वाले पर्वत, नदियाँ और जनपदों को विस्तारपूर्वक बताया है। जिसमें सम्पूर्ण देश का सांस्कृतिक वैभव तथा नैसर्गिक सौन्दर्य विरह के आकुल उद्गारों को समेट रखा हुआ है।

उत्तरमेघ में यक्ष अपनी नगरी अलका को वर्णित करते हुए अपने घर का पता बताता है, फिर अनुमान करता है कि उसकी प्रिया यक्षणी घर में क्या–क्या कर रही होगी। फिर वह यक्षिणी को सुनाने के लिए संदेश मेघ को बताता है। उसमें अपनी व्यथा, प्रेम, रसिकता को उद्भासित किया है।

महाकवि कालिदास को मेघदूत की प्रेरणा वाल्मीकि रामायण से मिली होगी। ऐसा दक्षिणा वर्तनाथ और मल्लिनाथ आदि टीकाकारों ने प्रतिपादित किया है। अशोक वाटिका में एकान्त में बैठी सीता से हनुमान् भेंट करते हैं और उन्हें राम का संदेश सुनाते हैं। विरहिणी सीता के वर्णन की छाया भी कालिदास की उक्तियों में कहीं–कहीं झलकती है। इसी प्रकार राम के विरह वर्णन ने यक्ष के विरह वर्णन को प्रभावित किया होगा–

इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य सम्भाव्य चैवम्।।[4]

कालिदास ने विरह–दशा को चित्रित करते हुए कहते हैं–यक्ष रामगिरि पर रहते–रहते आठ महीने बिता चुका था। शेष चार मास शाप की अवधि शेष रह गयी है। जैसे–जैसे मिलन का समय सन्निकट आता जाता है, विरही की इच्छा बढ़ती ही जाती है। यक्ष अपनी प्रियतमा के विषय में अनेक प्रकार चेष्टा करता हुआ मेघ को उद्बोधित करता हुआ कहता है कि वह उसके वियोग में दुःखी वह क्या–क्या कर रही होगी–

आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा
मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती।
पृच्छन्ती वा मधुरवचनां सारिकां पञ्जरस्थां
कच्चिद्भर्तुः स्मरसि रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति।।[5]

यक्षिणी को प्रेषित अपने संदेश में यक्ष ने अपनी मनोव्यथा, चिन्ता कातरता और प्रेम को बड़े रोचक ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनके दैनंदिन जीवन के छोटे–छोटे घटना–प्रसङ्ग मन के तारों को झकझोर कर रख देता है–

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया–
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम्।
अस्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः।।[6]

मेघदूत मनुष्य के अनंत स्वप्न जिजीविषा और प्रेम की अनन्य निष्ठा का खण्डकाव्य है। विरही यक्ष अपनी कान्ता को समझाता हुआ कह रहा है कि मैं भी अपने आपको किसी तरह सँभाले हुए हूँ। यह जगत ऐसा ही है, यहाँ किसको अत्यधिक सुखानुभति हुई तथा किसको दुःखानुभूति हुई है। रथ के पहिये की तीलियों के सदृश्य लोगों की भाग्यदशा कभी ऊपर तो कभी नीचे आती–जाती है–

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।[7]

संक्षेप में मेघदूत खण्डकाव्य की समीक्षा करते हुए कहा जा सकता है कि मेघ के प्रति मङ्गल कामना की उसका अपनी प्रियतमा से क्षण के लिए भी वियुक्त न हो।

भृङ्गदूत– स्वामी रामभद्राचार्य संस्कृत एवं अन्य कई भारतीय भाषाओं के अन्तस्तल स्पर्शी मर्म विद्वान हैं। इनकी सबसे बड़ी ख्याति यह है कि सर्वोत्कृष्ट के भगवद् भक्त और साधक हैं। ये वेद व्याकरण दर्शन तथा व्याकरणशास्त्र के परमविद्वान हैं। कथा प्रवचन तथा वाक्पटुता इनमें कूट–कूट कर विकास पराकाष्ठा पर विद्यमान है। स्वामी रामभद्राचार्य जी ने महाकाव्य खण्डकाव्य, कोशकाय, विरुदकाव्य, करम्भक कथा आख्यायिका चम्पू तथा रूपक उपरूपक जैसे प्राचीन पारम्परिक काव्यों की रचना की है। स्वामी जी द्वारा विरचित 'भृङ्गदूतम् मन्दाक्रान्ता गुम्फित' भक्ति प्रधान रचना करके इस संसार में इनका अलौकिक स्थान प्राप्त हुआ है। भृङ्दतम् के नायक पुरुषोत्तम श्रीराम तथा नायिका माता 'सीता' हैं। जहाँ कालिदास का 'मेघदूत' श्रृङ्गाररसासिक्त होकर काम कथा का वर्णन उद्धृत करते हैं वहीं 'भृङ्गदूतम्' भगवद्साभिषिक्त बनकर भारतीय संस्कारों की समग्रता, पुरातन सनातन संस्कारों तथा आदर्शों के प्रति समादर मर्यादा के संरक्षण तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण का सन्देश प्रस्तुत करता है जिसका दिग्दर्शन हमें भृङ्गदूतम् के प्रथम श्लोक में होता है–

रामोरामारमितचरितोऽप्यार्य मर्यादयाप्तं
पाद्मेः पद्मे पविमिव वहन् मूर्ध्नि शापं स्वतापम्।
नीत्वा बाणानलशलभतां वालिनं वानरेशं
कृत्वा मैत्रिं सहरिजिदरिः श्रावणोऽध्यास्त शैलम्।।[8]

विषयवस्तु– स्वामी रामभद्राचार्य जी ने अपनी कृति को दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग को पर्व भृङ्ग तथा द्वितीय भाग को उत्तर भृङ्ग के नाम से सम्बोधित किया है। सीता विरहातुर राम स्व मन–मधुकर को 'दूत' के रूप में प्रतिष्ठित कर लङ्केश रावणापहृत स्वभार्या प्राण प्रिया के पास सन्देश भेजते हैं। इसमें कुछ भी अस्वाभाविक एवं अपल्वित नहीं कहा गया है। इसमें वही वर्णित किया गया है जो भारतीय अनुशासित सभ्य, मर्यादावादी, युवक आदर्श पति अपनी एक मात्र प्रेम पात्र धर्मपरायणा, सती, शिष्ट एवं कोमल हृदया धर्मपत्नी के प्रति कह सकता है।[9] पुरुषोत्तम राम मन–मधुप से अपने मन की कहते हुए पुकार उठते हैं–

तत्वं प्रेयो विरहजलधौ दुस्तरे दूरतीरे
संमज्जन्त्या व्यसनपवनोद्विग्ननावः प्रियायाः।
भूयो भूयाः प्लव इव भवो मन्मनोभृङ्गदेव्याः
प्राहुः प्रैष्ठं विशदमगदं वाचिकं ह्यातुरायै।।[10]

स्वामी रामभद्राचार्य का मन–भृङ्ग क्रमबद्ध रूप से श्रीराम की महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ रक्षार्थ अरण्य प्रदेश मिथिला में विवाह नववधुओं का साकेत आगमन पुनः वनवास प्रकरण में श्रृङ्गवेरपुर भरद्वाज आश्रम चित्रकूट निवास से लेकर लङ्का तक के अरण्य चक्रमण मार्ग को क्रमबद्ध रूप से जाता हुआ हमें दृष्टिगोचर होता है। कहीं कवि पुण्यारण्य की भूमि को मस्तक पर धारण कराता है तो कहीं सीताकुण्ड मन मधुप को अवगाहन के लिए कहता है। कितनी सुन्दर अलंकारिक छटा विकिरित होती है जब कवि कहता है–

तस्मादेशाद्धरणितिलकाद्धारणेयीं दिदृक्षुः
प्रत्यङ्प्रत्यक् पुलककलितो याहि यायावरेश।
वैशाल्याम्भोः पिकररसैरर्चितोऽप्याम्रपाल्यां
मा रंसिष्ठा न पथि यतिनो विश्रमो मङ्गलाय।।[11]

भृङ्गदूतम् के द्वितीय भाग उत्तर भृङ्ग में किष्किन्धा में प्रवर्षण पर्वत पर विराजित श्रीराम रावण द्वारा अपहरण की गई सीता को अपनी मनोव्यथा सुनाने के लिए भ्रमर को सन्देश वाहक के रूप में उद्बोधित करते हुए कवि कह रहा है–

सीताशोकतृषिखजलदं वेगसंविग्नवातं
रातं रात्रा निखिलजगतां शान्तये संवृणेऽहम्।
रामो रामामवितुमरितो जीवजीवातुवाक्यैः
संदेशार्थैः पुनरपि मनोभृङ्ग दूतोत्तरे त्वाम्।।[12]

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भँवरे से जानकी को सन्देश भेजते हुए कहते हैं–

यस्या भर्ता भुवनविदितो धन्विधूर्यार्चिताङ्घ्री
रक्षोऽम्भोरुड्ढिमकरशरादेवराश्चापि यस्याः।
यस्यास्तेजस्तरुणतपनस्तप्यमानस्त्रिलोक्याम्
तस्या भीः किं हरिवरवधूः कुक्कुरात् किं बिभेति।।[13]

वह मनोभृङ्ग लङ्का में प्रस्थान करके श्रीराम के सन्देश को माता सीता जी के बाँए कान में सुनाया, श्रीराम सन्देश पाकर सीता अत्यधिक मुदित हुई तथा अपने हृदये कमल में विश्राम कराती है। प्रातःकाल सीता की आज्ञा लेकर प्रवर्षणपर्वत पर सुशोभित रघुवंशमणि श्रीराम के पास आकर मनोभृङ्ग सीता जी का सम्पूर्ण कुशल समाचार सुनाता है उसके बाद हनुमान आदि वानर सेना के साथ लङ्का में प्रवेश कर सपरिवार रावण वध करके देदीप्यमान सीता को प्राप्त कर अयोध्या प्रत्यावर्तन कर राज सिंहासन पर शोभायमान हो गये।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची–

1. मेघदूतम्–भूमिका, पृ0 35
2. पूर्वमेघ–1
3. पूर्वमेघ–5
4. उत्तरमेघ–40
5. उत्तरमेघ–25
6. उत्तरमेघ–45
7. उत्तरमेघ–49
8. पूर्व भृङ्ग–1
9. भृङ्गदूतम्, भूमिका–3
10. पूर्व भृङ्ग–19
11. पूर्व भृङ्ग–52
12. उत्तर भृङ्ग–1
13. उत्तर भृङ्ग–108